International Journal of Advanced Innovation and Research
Vol 3, Issue 1, January 2025
ISSN: 2584-2129

INTERNATIONAL JOURNAL OF
ADVANCED INNOVATION AND RESEARCH
journal homepage: www.ijair.in

सल्तनत कालीन हरियाणा में कुटीर उद्योगों का ग्रामीण अर्थव्यवस्था में योगदान (1206 से 1526 ईस्वी)

***[1]डॉ. विनोद कुमार**

*[1]सहायक अध्यापक, कुरूक्षेत्र

Keywords

स्वास्थ्य, हरियाणा, बुनियादी ढांचा, स्वास्थ्य देखभाल, चिकित्सा सेवाएं

ABSTRACT

मध्यकालीन हरियाणा, विशेषतः सल्तनत काल में, एक समृद्ध कृषि प्रधान क्षेत्र था जहाँ कृषि के साथ-साथ कुटीर उद्योगों ने भी स्थानीय और राजकीय अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाया। ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों द्वारा नील, गुड़, हथकरघा, चर्मकार्य, लकड़ी, नमक, नौसादर, शोरा, घी, बर्तन व ईंट-पत्थर उद्योग जैसे विविध कुटीर उद्योगों का संचालन किया जाता था। इन उद्योगों में जातीय विविधता और श्रमिक वर्ग की भूमिका महत्वपूर्ण रही, जिनकी सामाजिक स्थिति भले ही निम्न थी, परंतु आर्थिक योगदान अत्यंत मूल्यवान था। गांवों से कस्बों तक फैले ये उद्योग न केवल स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति करते थे, बल्कि व्यापारिक गतिविधियों को भी प्रोत्साहित करते थे। इस युग में गांवों और कस्बों का परस्पर संबंध और कृषि के साथ शिल्प की एकीकृत अर्थव्यवस्था, हरियाणा के सामाजिक व आर्थिक ढांचे की रीढ़ रही। इस अध्ययन में इन सभी कुटीर उद्योगों की ऐतिहासिक व सामाजिक भूमिका का विश्लेषण किया गया है।

परिचय:

प्राचीन काल से हरियाणा कृषि प्रधान क्षेत्र रहा है। कृषि की उत्कृष्टता के कारण यहां के निवासियों ने सदा ही राज्य की अर्थव्यवस्था के रूप में मजबूती प्रदान की है। इसी संदर्भ में हरियाणा में विचाराधीन काल में ग्रामीण उद्योगों के माध्यम से अर्थव्यवस्था को अधिक बढ़ावा मिला जिससे यहां पर लगने वाले हाट बाजारों में स्थानीय किसान अपने कृषक व गैर कृषि उत्पादन को बेचते थे और स्थानीय व राष्ट्रीय व्यापारी विभिन्न सामानों को खरीद कर यहां की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देते थे। इस क्षेत्र के अनेक गांव अपनी विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन में पहचान बना रहे थे। पुराने अंतरराष्ट्रीय व राष्ट्रीय मार्गों के स्थान पर नए मार्ग बन जाने से नए गांव विभिन्न मार्गों के नजदीक आने लगे। इस समय कुटीर उद्योगों का उद्भव होने व समय परिवर्तन के साथ-साथ जातीय संकीर्णता होते हुए भी टूटती हुई दिखाई देती है। सामंतवादी प्रणाली की स्थापना से भी यहां की अर्थव्यवस्था में परिवर्तन आ रहा था। भू - कृषक कृषि के साथ-साथ पशुपालन का कार्य करते थे। यहां के किसान छोटे-छोटे कुटीर उद्योगों जैसे नील, चीनी, हथकरघा, बर्तन कार्य, चर्म कार्य, नमक, नौसादर, लकड़ी, ईंट-पत्थर, घी, उत्पादन, शोरा व इत्र उद्योग से जुड़े हुए थे। जिससे इस क्षेत्र के निवासियों की अर्थव्यवस्था में तो परिवर्तन आया बल्कि राज्य की आय में भी वृद्धि हुई।

प्रस्तुत अध्याय में उपरोक्त सभी कुटीर उद्योगों का अध्ययन का प्रयास किया जाएगा जो कि अर्थव्यवस्था की दृष्टि से काफी उपयोगी थे जो कि गांवों से उभरकर कस्बों में परिवर्तित हो गए। कुछ गांव जो की सल्तनत काल में कम जनसंख्या वाले थे अब वे कस्बों के रूप में उभरकर आए जिनमें मुख्यतः थानेसर, पानीपत, नारनौल, हिसार सिरसा, रोहतक, महम आदि थे। विषय प्रस्तुति :-- प्राचीन काल से हरियाणा क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में कृषि के साथ-साथ कुटीर उद्योगों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। सल्तनत कालीन हरियाणा

क्षेत्र के निवासी गांव तथा कस्बों में अपनी पैतृक व्यवसाय में लगे रहे किंतु उनके कार्यों को समाज में जाति प्रथा की संकीर्णता के कारण सम्मान प्राप्त नहीं था तथा उनके औजार पुराने थे। उनमें कोई विशेष तकनीकी परिवर्तन न आया था तेरहवीं शताब्दी के प्रारंभ में मोहम्मद गोरी के आक्रमणों के फलस्वरूप तुर्कों के रूप में भारत में एक नए शासक वर्ग का उदय हुआ। नए शासकों की रूचि शिल्पकार जातियों के अपेक्षा शिल्प उत्पादों पर अधिक थी*1 उन्होंने जातिगत बंधनों को लागू करने में भी उदासीनता दिखलाई तथा पूर्व सल्तनत काल में प्रचलित अंतर को व्यवसायिक गतिशीलता को नियंत्रित किया। मध्य काल के दौरान हरियाणा क्षेत्र के समाज की गांवों व कस्बों के रूप में उन्नति हुई। गांव प्रायः एक दूसरे गांवों तथा कस्बे से जुड़े हुए थे। जिससे इस काल की अर्थव्यवस्था का संबंध गांवों, कस्बों व शहरों से था। कृषि फसलों के अतिरिक्त ग्रामीण अन्य वस्तुओं को कस्बों में ले जाकर बेचते थे। जिसमें मुख्यतः मिट्टी व धातु के बर्तन, पंसारी वस्तुएं, लकड़ी की वस्तुएं कृषि उत्पादों से बनाया गया सामान प्रमुख था। परंपरागत गांव समुदाय कृषि व शिल्पों के माध्यम से जुड़े हुए थे जो कि गांव समुदाय का ढांचा थे। शिल्पी कृषि से अलग नहीं थे तथा वे ही घरेलू उद्योगों को प्राथमिकता देते थे। मुख्य परंपरागत घरेलू उद्योग गांवों में किसानों द्वारा गांव की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए चलाए जाते थे। साप्ताहिक बाजार वस्तुओं को आदान- प्रदान करने के लिए लगाए जाते थे। छोटे पैमाने पर वस्तु उत्पादन दो रूपों में था। प्रथम किसान हस्त शिल्प द्वितीय व्यवसायिक हस्तशिल्प। इन कलाकारों ने बड़े पैमाने पर ग्रामीण क्षेत्रों तथा विशिष्ट शहरी जनसंख्या का आलिंगन किया जो की अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण भाग अदा करता था।

ग्रामीण कुटीर उद्योग-

ग्रामीण दस्तकारों को ग्राम समुदाय का सदस्य माना जाता था। कृषि उत्पाद से संबंधित अनेक लघु व कुटीर उद्योग गांवों में प्रचलित थे तथा श्रमिक विभिन्न कार्यों के माध्यम से अर्थव्यवस्थाको बढ़ावा देते थे जिससे वे जातीय व्यवसाय के रूप में अपनाने लगे। इस काल में यहां हिंदू समाज में मुख्यतः चार वर्गों के अतिरिक्त समाज में अनेकों जातियां तथा उपजातियां थी जो कि कृषि कार्यों के साथ-साथ अन्य छोटे-छोटे कुटीर उद्योगों में संलिप्त थी। समाज का उच्च वर्ग किसी भी शिल्प में शामिल नहीं था क्योंकि उनका विश्वास था कि उनकी जाति के नियमों में टकराव होगा। शिल्प तकनीक धीरे-धीरे विकसित हो रही थी जिसके परिणाम स्वरूप यहां अनेक जातियों का उद्भव हो रहा था। एक पिता से उसके पुत्र के पास उसका पुश्तैनी कार्य चला जाता था जिससे वह मेहनत से अपने कार्य में निपुण हो जाता था। ब्राह्मण, समाज का उच्च वर्ग धन व भिक्षा की कोशिश करता था। आर्थिक रूप से समाज को बढ़ावा देने के लिए वे कोई कार्य नहीं करते थे लेकिन बदलती हुई समय की परिस्थितियों के अनुसार इस वर्ग ने भी समाज की देखा देखी मे केवल अपने हितों के लिए काम धंधे अपनाने शुरू कर दिए। नाई गांव में औषधि, घरेलू पशु चिकित्सा, उत्सवो के अवसर पर संगीत करना, वैवाहिक दावतों पर भोजन तैयार करना, गांव समुदाय के सदस्यों के दूसरे गांव में समाचार पहुंचाना तथा गांव के उच्च वर्ग के परिवार की हजामत आदि करना इनके कार्य थे। कुम्हार, धोबी, नाई की समाज में महत्वपूर्ण भूमिका थी। वे जमींदारों के सहायक के रूप में भी कृषि कार्य करते थे*1 ग्राम स्तर पर खेती तथा उद्योग धंधों का गठजोड़ स्थापित हो गया था। ग्राम स्तर पर अनेक छोटे-छोटे कुटीर उद्योग निम्नलिखित जो कि कृषि पर आधारित थे।

1 नील उद्योग:-

12वीं से 15 वीं शताब्दी के बीच में रंगरेजों का मुख्य व्यवसाय कपड़ा रंगना था हरियाणा के बाजारों तथा स्थानीय आपूर्ति के लिए हरियाणा क्षेत्र में कृषकों द्वारा मेवात, रेवाड़ी व नूंह में नील पैदा किया जाता था। मेवात की नील की कीमत बयाना के नील से कम होती थी क्योंकि इस क्षेत्र का नील अच्छी किस्म का न था। यह प्रायः बालू से पूर्ण होता था। यहां के नील की कीमत ₹20 प्रति मांउड थी जबकि बयाना का नील ₹30 प्रति मांउड था*2 रंगाई उद्योग इस क्षेत्र में काफी लोकप्रिय था क्योंकि लोग चमकीले वस्त्र पहनने के शौकीन थे और नील की विभिन्न किस्में जैसे आसमानी, गहरा नीला, हल्का नीला, काला नीला तथा बैंगनी आदि ग्रामीणों द्वारा तैयार किया जाता था। पीला रंग हल्दी से निचोड़ा जाता था। जो कि इस क्षेत्र में कृषि से प्राप्त होता था। इसके साथ-साथ अन्य रंग विभिन्न रंगों को मिलाकर बनते थे। हल्दी में नीला रंग मिलाने से हरा रंग बनता था। हरे रंग को अनार के छिलके के रस को निचोड़ कर भी प्राप्त किया जाता था। सूती कपड़े को रंगरेजों द्वारा रंग किया जाता था तथा चित्र छापे जाते थे। जिसको पानी भी इसे धो नहीं सकता था।

3 गुड तथा चीनी उद्योग:-

सल्तनत काल में हरियाणा क्षेत्र में गन्ना का कृषि उत्पादन में महत्वपूर्ण स्थान था। हरियाणा क्षेत्र के हिसार सरकार के महम परगना में गन्ने का उत्पादन ग्रामीणों द्वारा किया जाता था। किसानों द्वारा गन्ने से बनाया गया गुड़ हरियाणा क्षेत्र में कुटीर उद्योग के रूप में महत्वपूर्ण था* 4 गन्ने से गुड़ व मिश्री बनाने की कला भी महत्वपूर्ण थी। निम्न वर्ग के परिवारों तथा हलवाईयों द्वारा गुड़ का प्रयोग किया जाता था। सामान्यतः गुड़ हरियाणा क्षेत्र के प्रत्येक कस्बे में बनाया जाता था तथा इसकी आपूर्ति की जाती थी। शहरों में गुड़ की साप्ताहिक मंडी लगती थी जिससे जनसंख्या का एक बड़ा भाग वाणिज्यिक तथा औद्योगिक केंद्रों के साथ बसने लगा। बड़े-बड़े औद्योगिक केंद्र आर्थिक रूप से कस्बों व शहरों से जुड़ने लगे।

हथकरघा उद्योग :-

हरियाणा क्षेत्र में हथकरघा उद्योग भी काफी महत्वपूर्ण था। जिसमें गांव के जुलाहों द्वारा इसको चलाया जाता था। इससे न केवल गांव के निवासियों की आवश्यकताएं पूरी होती थी बल्कि शहरों की भी आवश्यकताएं पूरी होती थी। हरियाणा क्षेत्र में कपास उत्पादन मुख्यतः हिसार, सिरसा, फतेहाबाद, जींद क्षेत्र में अधिक होता था। जिसमें ग्रामीण किसानों की महत्वपूर्ण भूमिका होती थी* 6 जुलाहों द्वारा दरिया, गलीचे व चद्दरें इस क्षेत्र में बुनी जाती थी जिनकी काफी अच्छी मांग थी। इस प्रकार हरियाणा क्षेत्र में कृषि उत्पादन से संबंधित अनेक कुटीर उद्योग थे जिन्होंने अर्थव्यवस्था को काफी बढ़ावा दिया लेकिन गांवों में कुटीर उद्योगों के रूप में ग्रामीणों द्वारा गैर कृषि उत्पादन भी किया जाता था। जो कि ग्रामीणों की आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ-साथ उनकी जीविका के मुख्य साधन थे।

गैर कृषि उत्पादन:-

बर्तन कार्य -

हरियाणा क्षेत्र में बर्तन उद्योग भी महत्वपूर्ण था। गांवों में किसान तथा निम्न वर्ग द्वारा प्रायः मिट्टी के बर्तन प्रयोग किए जाते थे जो कि गांव में ही कुम्हारों से प्राप्त होते थे। कुम्हारों द्वारा मेलों आदि के अवसरों पर भी बर्तनों की प्रदर्शनी लगाई जाती थी। जहां से अच्छे-अच्छे बर्तनों को खरीदा जाता था। हरियाणा क्षेत्र का कोई घर या महल बिना मिट्टी के बर्तनों के न होता था। बड़े मिट्टी के बर्तन जैसे पानी रखने के मटके, घड़े, सुराही, हांडी तथा खिलौने कुजीगरों व कुम्हारों द्वारा बनाए जाते थे। बर्तनों की किस्मों के इलावा जग, गमले तथा अन्य छोटे-छोटे बर्तन भी कुम्हारों द्वारा बनाए जाते थे जो कि हिंदुओं के त्योहारों में आम प्रयोग किए जाते थे। यद्यपि सामाजिक रूप से कुम्हार का समाज में आदरणीय सम्मान न था। फिर भी ग्रामीण व शहरी समाज में महत्वपूर्ण स्थान रखते थे। यद्यपि मिट्टी के बर्तन हरियाणा क्षेत्र के प्रत्येक गांव में कुम्हारों द्वारा तैयार किए जाते थे लेकिन झज्जर में बनी सुराहियों की मांग काफी थी*7

चर्म कार्य :-

चर्मकार तथा अन्य लोगों के लिए गांव समुदाय का हस्तशिल्प में मुख्य योगदान था। जो कि गांव में अछूत समझे जाते थे। आर्थिक व सामाजिक रूप से पद्वलित लोग जो उच्च वर्ग व किसान वर्ग द्वारा शोषित होते थे। समाज में चर्मकारों की अनेक श्रेणियां थी जिन्हें चमार, मोची तथा चकाती आदि नाम से जाना जाता था। इनका मुख्य कार्य चमड़े के जूते बनाना, शराब के बर्तन बनाना, घोड़े की जीन व साज सामान बनाना था। इस समय में चर्मकार जागीरदारों तथा गांव के लोगों को निश्चित संख्या में मुफ्त में जूते देता था। इस क्षेत्र में चर्मकार सफाई के अतिरिक्त कार्य भी करता था। ग्रामीण समुदाय के निम्न वर्ग के लोग बड़े किसानों के नौकर व द्वारपालों का कार्य भी करने लगे थे तथा कृषि कार्य में भी सहायता करते थे। इनकी मजदूरी बढ़ाई व लुहार के समान होती थी परंतु पहले से ही इनकी महत्ता पद दलित अछूतों के समान थी* 8

नमक उत्पादन :-

हरियाणा क्षेत्र में नमक उत्पादन भी ग्रामीणों द्वारा किया जाता था जो कि हरियाणा में सालम्भा तथा सुल्तानपुर से प्राप्त होता था जिनमें नूंह कस्बा के 12 गांव मुख्यतः मलाब, रानीका, अटका, बाई, खेरला, सालाहेड़ी, फिरोजपुर अहीर, निजामपुर तथा सालम्भा में ग्रामीणों द्वारा बनाया जाता था। नमक बनाने की प्रक्रिया में कूओं से खारा पानी कृत्रिम जलाशयों में डाला जाता था जब यह भाप बनकर उड़ जाता था तो इसमें ज्वार या

सन की झाड़ी डाली जाती थी तथा उसे रवेदार बनाकर 15 दिन तक रखा जाता था। जब झाड़ी को निकाला जाता था तब इससे नमक उतार लिया जाता था। किसानों द्वारा यह मंडियों में बेचा जाता था जिसकी कीमत 2 से 5 मांउंड थी। यह नमक आज भी उपरोक्त स्थानों पर बनाया जाता है। सुल्तानपुरी नमक झज्जर, झारसा तथा फर्रूखनगर परगनों में बनाया जाता था। इसके साथ साथ गुड़गांव व रोहतक परगनों के गांवों में भी काफी नमक बनता था जिससे काफी बड़ी मात्रा में अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिला।* 9

नौसादर :-

यह थानेसर के आसपास के गांवों में ग्रामीणों द्वारा तैयार किया जाता था* 10 जो कि पुराने आवें या ईंट के भट्टे के स्थान पर मिलती थी इसको शोरा की भांति साफ किया जाता था। नौसादर की कीमत 7:00 से 7:50 आना प्रति मांउड थी।

लकड़ी उद्योग:-

लकड़ी उद्योग भी इस क्षेत्र में काफी महत्वपूर्ण था जो कि लकड़ी के विभिन्न आकार स्थानीय श्रमिकों द्वारा बनाए जाते थे। यहां के शिल्पियों की कलाकारी हरियाणा के पुरानी हवेलियों के दरवाजों व खिड़कियों में स्पष्ट झलकती है। बढ़ई के प्रसिद्ध कार्य पलंग तथा चारपाई बनाना, दरवाजे बनाना तथा अन्य कृषकों के औजार बनाना था। खिजराबाद में लकड़ी का काफी कार्य होता था तथा हाट बाजार लगते थे। लकड़ी की बैठने की कुर्सियां व मूढे गुड़गांव के फर्रूखनगर में तथा लकड़ी के पांयों से चारपाईयां नारनौल में तैयार होती थी। चटाई ब व टोकरे हिसार में बनाए जाते थे।

ईंट व पत्थर कार्य:-

आधुनिक काल की अपेक्षा मध्य काल में ईंट व पत्थर कार्य का ज्यादा विकास न था। ग्रामीणों के घर प्रायः घास के बने होते थे। जिसमें मुख्यतः सरकंडे का प्रयोग किया जाता था। लेकिन पक्की सामग्री राजकीय कार्यों में प्रयोग की जाती थी जिससे इस क्षेत्र में किले, शाही महल, दफ्तर, मस्जिदें, मकबरे, प्रार्थना घर व हवेलियां बनाई जाती थी। श्रमिक ईंट बनाने तथा पत्थर तराशने का कार्य करते थे। मजदूर काफी गरीब स्थिति में थे जिनका वर्णन भारतीय भक्तों ने अपनी वाणियों में किया है। वे अपनी आजीविका चलाने के लिए इन छोटे छोटे उद्योगों में कार्य करते थे। इस काल में श्रमिकों द्वारा मीनाकारी टाइलें व ईंटें बनाई जाती थी।

घी:-

हरियाणा क्षेत्र में इस काल में के दौरान गैर कृषि उत्पादन में काफी अग्रणी था जिससे दूध व घी का उत्पादन यहां काफी मात्रा में होता था। यहां के प्रत्येक गांव व कस्बे में पशुपालन का कार्य होता था। जिससे यहां के निवासी अपने आहार में दूध व घी का अधिक प्रयोग करते थे। सल्तनत काल में हांसी व हिसार में घी का उत्पादन काफी मात्रा में होता था। जिसकी मांग केंद्रीय प्रशासन तक थी। इस क्षेत्र में चरागाह के लिए भूमि काफी मात्रा में उपलब्ध थी तथा लोग पशुपालन का धंधा करते थे तथा पशुओं के माध्यम से अपनी जीविका चलाते थे। दूध व घी यहां से हरियाणा के अन्य भागों में निर्यात किया जाता था*12

शौरा उत्पादन:-

12वीं व 13वीं शताब्दी में स्थानीय लोगों द्वारा शोरा बनाया जाता था। हरियाणा क्षेत्र में शोरे के मुख्य केंद्र नूंह तथा फिरोजपुर झिरकां थे। इसके अतिरिक्त थानेसर वह कैथल के अनेक गांव से भी शोरा प्राप्त किया जाता था जिसका प्रयोग बंदूक पाऊडर के लिए होता था। विभिन्न जातियों के व्यक्ति जो शोरा बनाते थे। नूनेहे तथा शोरगीर कहे जाने लगे जो कि एक मुख्य जाति बन गई। यह पानी व मिट्टी से बनाया जाता था जो कि विशेष प्रकार की होती थी। कुओं से पानी को मिट्टी में डालकर खुले मैदानों पर छोड़ा जाता था तथा पानी को फिर धूप में सुखा दिया जाता था। जिस पर सफेद पाउडर की परत जम जाती थी और उसे अलग कर दिया जाता था।*13

उपसंहार:-

इस प्रकार हम देखते हैं कि मध्यकालीन हरियाणा के अनेक गांवों में कुटीर उद्योग चलाए जा रहे थे जो कि अर्थव्यवस्था को तो बढ़ावा दे ही रहे थे इसके साथ-साथ शहरों की आपूर्ति भी कर रहे थे जिससे इनका

अर्थव्यवस्था में काफी महत्वपूर्ण योगदान रहा। इस प्रकार सल्तनत कालीन हरियाणा के विभिन्न गांवों में कुटीर उद्योग स्थापित थे जो कि स्थानीय निवासियों की आवश्यकताओं के साथ-साथ राज्य की अर्थव्यवस्था की वृद्धि में काफी सहायक थे।14

प्राचीन काल से हरियाणा क्षेत्र में अच्छी खेती रही है जिससे सल्तनत काल में सिरसा से अच्छे चावल उत्पादन के प्रमाण मिलते हैं जिसकी प्रशंसा इब्नबतूता ने की है15 इसी प्रकार जब तैमूर ने हरियाणा क्षेत्र से अभियान किया तो उसने कैथल, करनाल व पानीपत के क्षेत्रों से काफी भारी मात्रा में गेहूं का उल्लेख किया जिसकी मांग देश के अन्य भागों में थी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. जर्नल आफ एशियाटिक सोसाइटी ऑफ़ बंगाल, कोलकाता, 1935, भाग-1, पृष्ठ 197 -198
2. एन. जयपालन, इकोनामिक हिस्ट्री ऑफ़ एनिशियन्ट टू प्रेजेंट, दिल्ली, 2001, पृष्ठ, 92
3. अबुल फजल, आईने अकबरी अंग्रेजी अनुवाद एच ब्लॉचमैन, भाग-1, पृष्ठ, 16
4. जदुनाथ सरकार मुगल इकॉनमी: ऑर्गेनाइजेक्शन एंड वर्किंग, कोलकाता 1978, पृष्ठ, 26
5. डब्ल्यू.एच.मोरलैंड , एग्रेरियन सिस्टम आफ मुस्लिम इंडिया, दिल्ली, पृष्ठ, 47
6. डब्ल्यू.एच.मोरलैंड , एग्रेरियन सिस्टम आफ मुस्लिम इंडिया, पृष्ठ, 48
7. जदुनाथ सरकार, मुगल इकॉनमी: ऑर्गेनाइजेक्शन एंड वर्किंग, पृष्ठ 34
8. पी.एन.ओझा , आस्पेक्ट्स ऑफ़ मिडिवल इंडियन सोसायटी एंड कल्चर, दिल्ली, 1978, पृष्ठ, 136-137
9. पी.एन.ओझा, एस्पेक्ट्स आफ मेडिवल इंडियन सोसायटी एंड कल्चर दिल्ली 1978 पृष्ठ 136 -137
10. वाल्टर हैमिल्टन, ए ज्योग्राफिकल स्टैटिकल एंड हिस्टोरिकल डिस्क्रिप्शन ऑफ़ हिंदुस्तान एंड एडजेसेन्ट कंट्रीज, लन्दन, 1820, दिल्ली 1977 भाग 1 पृष्ठ 405-406
11. डब्ल्यू. एच. मोरलैंड, एग्रेरियन सिस्टम ऑफ़ मुस्लिम इंडिया, पृष्ठ, 154 , जे. एन . मुगल इकॉनमी : ऑर्गेनाइजेक्शन एंड वर्किंग पृष्ठ 34
12. शहाबुद्दीन अल उमरी, मसालिक उल अबसार फी मुमालिक अमसार, हिंदी अनुवाद सैयद अतहर अब्बास रिजवी, तुगलककालीन भारत, भाग-2 अलीगढ़ ,1960 पृष्ठ, 312
13. विलियम फ्रैंकलिन , मिलिट्री मेमॉयर्स ऑफ़ जॉर्ज थॉमस,पृष्ठ ,39 शम्स-ए-सिराज अफीफ, तारीख- ए - फिरोजशाही, बिब्लिओथिका इंडिया कोलकाता,1890,पृष्ठ, 333, युसूफ हुसैन, मध्ययुगीन भारतीय संस्कृति की एक झलक, हिंदी अनुवाद मोहम्मद उमर,अलीगढ़,पृष्ठ,130
14. एम. एल.भागी,मिडिवल इंडियन कल्चर एंड थॉट,अंबाला,1974,पृष्ठ 340
15. इब्नबतूता,यात्रा विवरण,हिंदी अनुवाद,सैयद अतहर अब्बास रिजवी, तुगलक कालीन भारत, भाग 1,पृष्ठ 169-170